भारतीय ज्ञान प्रणाली: सांख्य और न्याय दर्शन का योगदान - एक तुलनात्मक अध्ययन

दर्शनशास्त्र विभाग (मानविकी संकाय) राँची विश्वविद्यालय में पीएच. डी उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रस्ताव

2025

शोध निर्देशिका

डॉ. आरती मोदक
सहायक प्राध्यापक
दर्शनशास्त्र विभाग
रांची विमेंस कॉलेज
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

मनीषा महतो
दर्शनशास्त्र विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध शीर्षक:

भारतीय ज्ञान प्रणाली: सांख्य और न्याय दर्शन का योगदान - एक तुलनात्मक अध्ययन

1. परिचय (Introduction):

भारतीय ज्ञान प्रणाली भारत में विकसित ज्ञान की परंपरा को कहते हैं। यह हजारों वर्ष पुरानी एक समृद्ध और बहुआयामी परंपरा है जो मानव जीवन के सभी पहलुओं आध्यात्मिक, भौतिक, मानसिक और सामाजिक को - समाहित करती है।यह प्रणाली एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान हस्तांतरण की एक व्यवस्थित और संरचित प्रक्रिया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली वेद, उपनिषद, धर्म, राजनीति, दर्शन, साहित्य, कला और विज्ञान सहित सभी प्रकार के ज्ञान से सुसज्जित प्रणाली है। भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल एक परंपरा नहीं है, यह समग्र मानव विकास, विज्ञान, गणित, प्रौद्योगिकी और राजनीति सहित सामाजिक व्यवस्था की अन्य समस्याओं को भी हल कर सकता है। यह व्यक्ति की स्वयं, प्रकृति और ब्रह्मांड के बारे में समग्र समझ पर जोर देता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली की विशेषता यह है कि यह प्रणाली अनुभवजन्य, तर्कसम्मत और आध्यात्मिक तीनों स्तरों पर कार्य करती है। भारत को अपनी ज्ञान प्रणाली और संस्कृति के कारण दुनिया के सर्वश्रेष्ठ देशों में से एक माना जाता था। हमें प्राचीन भारत की महानता के बहुत सारे संकेत मिलते हैं, जैसे महर्षि कणाद परमाणु सिद्धांत के प्रतिपादक थे, प्राचीन भारतीय शून्य और दशमलव प्रणाली ने आधुनिक गणित और प्रौद्योगिकी की नींव रखी। महर्षि लगध का सौर कैलेंडर और चंद्र कैलेंडर विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त प्राचीन भारत की वास्तुकला और मूर्तिकला विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जैसे साँची स्तूप, अजंता और एलोरा के गुफा चित्र, एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर आदि।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंतर्गत दर्शनशास्त्र ज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा है। भारत दार्शनिक चर्चाओं में शीर्ष पर था। जहां से हमें वेदांत जैसा गहन ज्ञान, न्याय जैसा तर्कसंगत विचार, वैशेषिक का भौतिक जगत का ज्ञान, सांख्य दर्शन में चर्चित प्रकृति सिद्धांत का ज्ञान आदि प्राप्त हुआ है। जीवन के सभी प्रश्नों को रोकने का एकमात्र तरीका दर्शन है। भारतीय दर्शन की विभिन्न शाखाएँ ज्ञान और जीवन के अर्थ से संबंधित मौलिक प्रश्नों के उत्तर की खोज के साथ-साथ रचनात्मक चिंतन और नवाचार पर जोर देती हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रकृति यह है कि इसमें ज्ञान, तर्क, अनुभव और मुक्ति के उपाय को परस्पर पूरक माना गया है। वर्तमान समय के शिक्षा पद्धति जहां ज्ञान को केवल तर्क और सूचना तक सीमित रखती है वहीं भारतीय ज्ञान प्रणाली मानव चेतना और अंत:करण की भूमिका को भी स्वीकार करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत दार्शनिक ज्ञान केवल भौतिक उन्नति के लिए नहीं है यह मुक्ति और आत्म ज्ञान के साधन के रूप में नियोजित है।

इस शोध में सांख्य और न्याय दर्शन पर विशेष ध्यान दिया जाएगा, जिन्हें भारतीय ज्ञानमीमांसा और तर्कशास्त्र के दो मुख्य स्तंभों के रूप में भी मान्यता प्राप्त है। इसमें ज्ञान केवल तथ्य नहीं है बल्कि यह बुद्धि से विवेक तक और बंधन से मुक्ति की यात्रा है। इस शोध में भारतीय ज्ञान प्रणाली के इसी गूढ़ तत्व और वैज्ञानिक स्वरूप को समझने का प्रयास किया जाएगा विशेषत: सांख्य और न्याय दर्शन के माध्यम से।

2. शोध विषय की अधतन स्थिति (State of Art):

भारतीय दर्शनों में सांख्य और नए दर्शन विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि यह दोनों दर्शन ज्ञान, विश्लेषण, और तर्क की प्रक्रियाओं पर गहन बल देते हैं। सांख्य और न्याय दर्शन दोनों ही भारतीय ज्ञान प्रणाली के दो महत्वपूर्ण स्तंभ है। जहां सांख्य दर्शन पुरुष और प्रकृति के विश्लेषण द्वारा मोक्ष का मार्ग

प्रशस्त करता है, वही न्याय दर्शन भी तर्क, प्रमाण और ईश्वर की भूमिका द्वारा यथार्थ ज्ञान की खोज करता है। इस शोध में दोनों दर्शनों के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होगा कि भारतीय दार्शनिक परंपरा खास करके सांख्य और न्याय आध्यात्मिक चर्चाओं के साथ वैज्ञानिक सोच, तर्क और विवेक में भी समृद्ध है।

सांख्य की मूल अवधारणाएं : सांख्य दर्शन एक अत्यंत प्राचीन और वैज्ञानिक दर्शन प्रणाली है जो द्वैतवादी दृष्टिकोण के माध्यम से जगत की सृष्टि की रचना को 'पुरुष' और 'प्रकृति' के सहयोग से समझाता है। महर्षि कपिल ने इस दर्शन की स्थापना की। यह दर्शन आत्मा की स्वतंत्रता और विवेकज्ञान की माध्यम से मोक्ष प्राप्ति पर केंद्रित है। सांख्य दर्शन आध्यात्मिक मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करने के साथ ही उनका विश्लेषणत्मक दृष्टिकोण, प्रमाण प्रणाली और तत्व मीमांसा भारतीय ज्ञान परंपरा को वैश्विक बौद्धिकता के समकक्ष खड़ा करते हैं।

i) द्वैतवाद - सांख्य दर्शन के अनुसार सृष्टि दो मूल तत्व से बनी है - पुरुष (चेतन), और प्रकृति (अचेतन)

ii) सृष्टितत्व - प्रकृति से उत्पन्न होते हैं - बुद्धि - अहंकार - मन ,पंच ज्ञानेंद्रिय, पांच कर्मेंद्रियां, पांच तन्मात्र और पंच महाभूत - यह चौबीस तत्व और एक पुरुष मिलाकर पच्चीस तत्व का वर्णन सांख्य सृष्टि तत्व में किया गया हैं।

iii) प्रमाण - सांख्य दर्शन तीन प्रमाणों को मानता है: प्रत्यक्ष, अनुमान, और शब्द।

iv) मोक्ष की अवधारणा - यथार्थ ज्ञान के माध्यम से आत्मा जब समस्त बंधनों से मुक्त हो जाती है तब मोक्ष की प्राप्ति होती है यह दुखों की निवृत्ति और आत्मा की स्वतंत्रता स्थिति है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली में योगदान : सांख्य ने भौतिक जगत अर्थात प्रकृति और चेतन अर्थात पुरुष के बीच संबंध की व्याख्या कर के वैज्ञानिक दृष्टिकोण दिया।

सांख्य ने ज्ञानयोग के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति का सिद्धांत दिया।

न्याय की मूल अवधारणाएं : न्याय दर्शन भारतीय ज्ञान प्रणाली के एक अत्यंत महत्वपूर्ण तात्विक एवं तार्किक दर्शन है। न्याय दर्शन का प्रतिपादन महर्षि गौतम ने किया ।न्याय दर्शन का उद्देश्य यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त करना है। यह दर्शन प्रमाण और तर्क की व्यवस्थित चर्चा करता है, और भारतीय तर्कशास्त्र की नींव रखता है।

i) ज्ञान की प्रकृति - न्याय के अनुसार ज्ञान वह अनुभूति है जो किसी वस्तु के यथार्थ स्वरूप को प्रकट करती है। न्याय के अनुसार ज्ञान दो प्रकार का है - स्मृति और अनुभवजन्य ज्ञान (प्रत्यक्ष, अनुमान आदि)।

ii) प्रमाण - न्याय दर्शन चार प्रमाणों को मान्यता देता है।

प्रत्यक्ष: इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त ज्ञान को प्रत्यक्ष ज्ञान बोला जाता है।

अनुमान: करण और लक्षण के आधार पर जो ज्ञान आधारित है उसको अनुमान ज्ञान बोला जाता है।

उपमान: समानता के आधार पर आधारित ज्ञान है उपमान ज्ञान।

शब्द: विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त ज्ञान (वैदिक वाक्य) है शब्द प्रमाण।

iii) पदार्थों का वर्गीकरण - न्याय दर्शन ने सोलह पदार्थ की व्याख्या की जिनमें प्रमाण, प्रमेय, संशय आदि शामिल है।

iv) आत्मा का स्वरूप- न्याय दर्शन में आत्मा को एक स्वतंत्र और अनंत द्रव्य के रूप से माना जाता है। न्याय के अनुसार आत्मा चेतना का आधार है ।

v) मोक्ष की अवधारणा - यथार्थ ज्ञान के माध्यम से आत्मा जब समस्त बंधनों से मुक्त हो जाती है तब मोक्ष का प्राप्त होती है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली में योगदान : न्याय दर्शन ने भारतीय दर्शन को तर्कसंगत आधार दिया।

न्याय के प्रमाण सिद्धांतों ने आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति को प्रभावित किया।

न्याय ने शास्त्रार्थ (तर्क-वितर्क) की परंपरा को बढ़ावा दिया।

सांख्य और न्याय दर्शन की तुलना :

तत्वमीमांसा -

सांख्य दर्शन एक द्वैतवादी दर्शन है जो पुरुष और प्रकृति को स्वतंत्र, अनादि और अनंत तत्व के रूप में स्वीकार करता है, यह दर्शन में ईश्वर को अनावश्यक माना जाता है।

न्याय दर्शन भी आत्मा और द्रव्य की अस्तित्व को स्वीकार करते हैं परंतु यह दर्शन ईश्वर के अस्तित्व को आवश्यक मानता है। इस दर्शन के अनुसार ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और सृष्टि का नियामक है।

ज्ञानमीमांसा -

संख्या दर्शन में तीन प्रमाणों का मान्यता दिया गया है - प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द।

न्याय दर्शन में चार प्रमाणों को मान्यता दिया गया है - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द।

न्याय दर्शन में ज्ञान की प्रक्रिया को अधिक विस्तृत और विश्लेषण किया गया है जिससे यह तर्कशास्त्र का आधार बनता है। तर्कशास्त्र को सभी शास्त्र का दीपक बोला जाता है।

मोक्ष की अवधारणा -

सांख्य दर्शन मोक्ष को पुरुष और प्रकृति के भेद ज्ञान के माध्यम से प्राप्त होने वाला दुखनिवृत्ति का स्वरूप मानता है।

न्याय दर्शन मोक्ष को यथार्थ ज्ञान, कर्मों का क्षय और आत्मा की स्वतंत्र अवस्था के रूप में परिभाषित करता है।

सांख्य और न्याय दोनों दर्शनों में ज्ञान ही मोक्ष का साधन है परंतु न्याय दर्शन में ईश्वर और नैतिकता की भूमिका अधिक है।

कार्य-कारण तत्व -

कार्य कारण व्याख्या के दृष्टिकोण से सांख्य दर्शन सत्कार्यवादी दर्शन है।

न्याय दर्शन कारण तत्व की व्याख्या में असत्कार्यवाद को समर्थन करते हैं।

3. अनुसंधान की समस्या (Research Problem):

किसी भी विषय पर शोध करने से पहले यह पता लगाना महत्वपूर्ण है कि समस्या क्या है। हम सभी जानते हैं कि एक समय में भारत अपनी शिक्षा, दर्शन, साहित्य, गणित, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए पूरे विश्व में प्रतिष्ठित था। आधुनिक युग से हजारों वर्ष पहले भी हम आध्यात्मिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक अनुसंधान, वास्तुकला और मूर्तिकला में बहुत अधिक उन्नत थे। लेकिन समस्या यह है कि क्या हम पश्चिमी मानदंडों और मूल्यों के बीच में भारतीय ज्ञान प्रणाली को भूल रहे हैं? यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि

भारतीय ज्ञान प्रणाली के दार्शनिक अभ्यास में आध्यात्मिक के साथ-साथ वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य भी शामिल था। उदाहरण के लिए, महर्षि कण्णर परमाणु सिद्धांत के प्रतिपादक थे, नागार्जुन प्रसिद्ध रसायनशास्त्री थे, सांख्य दर्शन ने प्रकृति के नियमों की व्याख्या की तथा न्याय दर्शन ने तर्क के माध्यम से निष्कर्ष निकालने का तरीका बताया। इसलिए, इस शोध में उस विषय की तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा की कैस सांख्य और न्याय दर्शन भारतीय ज्ञान प्रणाली में योगदान रखते हैं।

4. अनुसंधान का उद्देश्य और प्रेरणा (Research Objective And Motivation):

i) इस शोध का मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान प्रणाली, विशेष रूप से संख्या और न्याय दर्शन के मूल सिद्धांतों का विश्लेषण करना।

ii) दोनों दर्शन के ज्ञानमीमांसा, तत्वमीमांसा और मोक्ष सिद्धांत की तुलना करना। उनके ऐतिहासिक और बौद्धिक योगदान को समझना।

iii) भारतीय ज्ञान प्रणाली को पारंपरिक तरीके से आगे ले जाना।

iv) समकालीन संदर्भ में इन दर्शनों की प्रासंगिकता को उजागर करना।

पिछली कुछ परंपरा हमारे प्राचीन ज्ञान और पारंपरिक शिक्षा से थोड़ा वंचित हो गए हैं। परिणामस्वरुप वर्तमान समाज में भारतीय संस्कृति, भाषा और दर्शन के प्रति उदासीन रवैया पैदा हो गया है। ऐसी परिस्थितियों इस शोध के लिए प्रेरणा प्रदान करती हैं।

5. अनुसंधान प्रश्नावली (Research Questions):

भारतीय ज्ञान प्रणाली सभी प्रकार के ज्ञान से परिपूर्ण है, जिसमें शिक्षा ,विज्ञान, दर्शन, प्रौद्योगिकी आदि सम्मिलित हैं । इस शोध का विषय भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंतर्गत सांख्य दर्शन और नए दर्शन के योगदान की व्याख्या करना और दोनों दर्शन के मूल सिद्धांत का तुलना करना।

इस शोध के कुछ प्रश्न इस प्रकार हैं:

i) भारतीय ज्ञान प्रणाली क्या है?

ii) भारतीय ज्ञान प्रणाली को संरक्षित रखना क्यों आवश्यक है?

iii) सांख्य दर्शन का मूल सिद्धांत क्या है?

iv) न्याय दर्शन का मूल सिद्धांत क्या है?

v) सांख्य और न्याय दर्शनों में ज्ञानमीमांसा, तत्वमीमांसा और मोक्ष प्राप्ति के साधनों में अंतर क्या है?

vi) वर्तमान समय में भारतीय ज्ञान प्रणाली के हिस्से के रूप में सांख्य और न्याय दर्शन हमारी किस प्रकार सहायता कर सकता है?

6. अनुसंधान का प्रारूप एवं पद्धति (Research Design and Methodology):

इस शोध में सैद्धांतिक और विश्लेषणात्मक विधियों का प्रयोग किया जाएगा। यह शोध, सांख्य दर्शन और न्याय दर्शन के प्राचीन ग्रंथ, संख्या और न्याय दर्शन के सहायक ग्रंथ, शोध पत्र और दार्शनिक व्याख्या पर आधारित होगा।

7. तथ्य संकलन (Source of Data Collection):

इस शोध के लिए दर्शनशास्त्र के मूल ग्रंथ तथा प्राचीन ग्रंथ (सांख्यकारिका, न्यायसूत्र आदि), इस शोध के विषय से संबंधित पुस्तकें, लेख, शोध पत्र आदि के सहायता ली जाएगी।

8. तथ्य विश्लेषण (Data Analysis):

इस शोध के लिए आवश्यक मूल पुस्तकों, सहायक पुस्तकों, विभिन्न शोध पत्रों आदि से तथ्य एकत्र की जाएगी। उस तथ्य की विवेचनात्मक समीक्षा , विचारों की वर्गीकरण और व्याख्या की जाएगी एवं विश्लेषण के आधार पर शोध निर्णय लिया जाएगा।

9. वर्तमान समस्याओं के संदर्भ में इस शोध की प्रासंगिकता (Its Relevance To present Day Problem and Need of Society):

वर्तमान समय में जब तर्क और विज्ञान का वर्चस्व है, तब इसे सही रूप से एक नया दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए भारतीय परंपरा को समझना बहुत आवश्यक है। सांख्य दर्शन आत्मज्ञान पर बल देता है, जबकि न्याय दर्शन यथार्थ ज्ञान और तर्क के माध्यम से सत्य की खोज करता है। इसीलिए आज की समय पर

भारतीय परंपरा के इन दर्शनों का विश्लेषण अत्यंत उपयोगी है, इन दोनों का अध्ययन वर्तमान शिक्षा नीति और तर्कशास्त्र के क्षेत्र में नया दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है।

10. वर्तमान में प्रस्तावित शोध का योगदान (Contribution To Existing Knowledge):

यह शोध भारतीय ज्ञान प्रणालियों और दर्शन के प्रति उत्साह पैदा करेगा।

दर्शनशास्त्र एक ऐसा शास्त्र है जो सभी ज्ञान की दिशा दिखाता है। इस शोध में सांख्य और न्याय दर्शन के तुलनात्मक अध्ययन के साथ ही संदर्भ में संपूर्ण जगत और जीवन का ज्ञान और व्याख्या भी मिलेगी।

वर्तमान समय विज्ञान की देन है। इस समय पर भी भारतीय प्राचीन दर्शन सांख्य का सृष्टि के बारे में वैज्ञानिक चिंतन और न्याय का युक्ति ,तर्क वैचारिक विवेक आदि को प्रोत्साहित करेगा।

11. भविष्य में कार्य होने का संभावना (Future Work):

भारतीय ज्ञान प्रणाली पारंपरिक ज्ञान है जो लंबे समय से प्रचलित है। यह शोध भारतीय ज्ञान प्रणाली के संदर्भ में किया जाएगा जिसमें सांख्य और न्याय दर्शन का अध्ययन करके दोनों दर्शन का तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, मोक्ष की अवधारणा की तुलना की जाएगी। ये दोनों भारतीय दार्शनिक परंपरा आध्यात्मिकता

के साथ-साथ वैज्ञानिक सोच, तर्क और विवेक में भी समृद्ध हैं इसीलिए भविष्य में इस विषय पर और अधिक काम होने की संभावना है।

12. संभावित अध्याय (Tentative Chapters):

भूमिका

प्रथम अध्याय - भारतीय ज्ञान प्रणाली का परिचय

द्वितीय अध्याय - सांख्य दर्शन: सिद्धांत और विश्लेषण

तृतीय अध्याय - न्याय दर्शन: सिद्धांत और विश्लेषण

चतुर्थ अध्याय - सांख्य दर्शन और न्याय दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन

पंचम अध्याय - सांख्य दर्शन और न्याय दर्शन के संदर्भ में वर्तमान समय में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता

निष्कर्ष

सहायक ग्रंथ सूची (Reference):

1. अग्रवाल, डॉ. गीता रानी, *भारतीय ज्ञान मीमांसा*, भारतीय शिक्षा संस्थान, वाराणसी, 1999
2. पाठक, आचार्य चित्तनारायण, *न्याय दर्शनम*, चौखम्बा विद्या भवन, 2012
3. शास्त्री, आचार्य उदयवीर, *सांख्य दर्शन का इतिहास*, विजय कुमार गोविंदराम हासानंद, 2020
4. पांडे, डॉ. नरेंद्र कुमार, शर्मा, डॉ. विवेक, *भारत की ज्ञान प्रणाली*, सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2023
5. Chatterjee, Satish Chandra, *The Nyaya Theory of Knowledge*, Calcutta University, Calcutta, 1978
6. सिन्हा, नीलिमा, *इंडियन एपिस्टेमोलॉजी*, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 2004
7. यादव, डी.आर., *भारतीय दर्शन*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2013
6. मिश्र, डॉ. हृदय नारायण, *भारतीय दर्शन*, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, 2022